नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 13, अंक : 1, जनवरी 2025

लावणी लोकनृत्य में अभिनय : कथक नृत्य के विशेष सन्दर्भ में

हिमानी खोंडे
शोधार्थी, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़

डॉ. शिवाली सिंह बैस
शोध निर्देशिका

सार-संक्षेप

महाराष्ट्र राज्य का लोकनृत्य लावणी हैं, यह लोकनाट्य तमाशा का एक अभिन्न अंग हैं। लावणी लोकनृत्य में अभिनय केंद्रबिन्दु हैं, कथक नृत्य में भी अभिनय केन्द्रबिन्दु हैं। कथक नृत्य शैली व लावणी लोकनृत्य में कलाकार नृत्य के भावनात्मक पहलूओं पर जोर देते हुए अभिनय प्रस्तुत करता हैं और इसी कला के माध्यम से भावनाओं को व्यक्त करने की क्षमता को अभिनय कहा जाता हैं। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य कथक नृत्य और लावणी लोकनृत्य में अभिनय के सहसंबंधों को स्पष्ट किया गया है। दोनों नृत्य शैलियों में रचनाकारों ने कई रचनाएँ लिखी हैं और इन्ही रचनाओं को दोनों नृत्य शैली के कलाकार मुद्राओं और अंग संचालन द्वारा अभिनय प्रस्तुत करते हैं। इस शोध में साहित्य समीक्षा, सहसंबंध शोध प्राविधि तथा साक्षात्कार द्वारा अध्ययन किया गया हैं। इस शोध के माध्यम से कलाकार दोनों नृत्य शैली की संस्कृति से रू-ब-रू हो पाएँगे तथा अभिनय पक्ष के विभिन्न पहलूओं के पक्षों को गहराई से समझ पाएँगे।

मुख्य शब्द : लावणी लोकनृत्य, कथक नृत्य, अभिनय, भाव, कलाकार।

शोध-पत्र

परिचय

भारतीय नृत्यकलाओं में और नाट्यपरम्परा में अभिनय शब्द का प्रयोग बहुत व्यापक रूप से लिया गया हैं (सिंह 37)। प्रस्तुत शोध के विषय लावणी लोकनृत्य में अभिनय से संदर्भित कथकनृत्य में अभिनय की अभिव्यक्ति का विश्लेषणात्मक अधययन किया गया हैं। भरतमुनि नाट्यशास्त्र के अनुसार, अभिनय शब्द 'अभि' उपसर्ग और 'णीञ' धातु से अभिनय शब्द की उत्पत्ति हैं। शाखा, अंग, व उपांग के माध्यम से शब्दों के विविध अर्थो को नृत्य के माध्यम से अभिनय व्यक्त किया जाता हैं। प्रस्तुत शोध विषय में 'अभिनय' का अध्ययन कथक नृत्य व लावणी लोकनृत्य दोनों शैली को संदर्भित करते हुए किया गया हैं। (शुक्ल शास्त्री 4)।

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य कलाकारों में अभिनय की बारीकियों से परिचित कराना हैं तथा दोनों नृत्य शैली किस प्रकार एक दुसरे से मिलती हैं, किस प्रकार से लावणी लोकनृत्य व कथक नृत्य में भाव सौंदर्य की एकरूपता हैं। दोनों नृत्य शैलियों के साहित्य व दोनों नृत्य शैलियों की संस्कृति से रू-ब-रू कराना ही शोध का उद्देश्य हैं। लावणी लोकनृत्य होते हुए भी किस प्रकार शास्त्रीय कथक नृत्य के अभिनय से जुड़ा हैं इससे दोनों नृत्य शैलियों के कलाकार परिचित हो पाएँगे।

सभी शास्त्रीय नृत्य शैलियों में अभिनय समाहित हैं–परंतु कथक नृत्य शैली में अन्य शास्त्रीय नृत्य शैली के अपेक्षा सहज व स्वाभाविक रूप से है (नागर 73)। भजन, ठुमरी, श्लोक, कविता, गीत, दादरा आदि में कथक नृत्य में भाव दिखाया जाता हैं (नागर 45)। लावणी लोकनृत्य में आध्यात्मिक, पौराणिक, श्रृंगारिक, गणेश-शंकर आदि देवताओं का वर्णन, सामाजिक व किसी क्षेत्र का वर्णन इत्यादि विषयों में अनेक रसों की छटाएँ हैं जैसे वीर, शांत, करुण, भक्ति, वत्सल, हास्य, वीभत्स, भयानक (धोंड 13) इन्हीं विषयों पर आधारित मुद्राभिनय, नेत्रकटाक्ष, अदाकारी की जाती हैं, साक्षात्कार में कहा गया कि लावणी में नयन भाव, बोल भाव, अर्थ भाव, अंग भाव राग-अनुराग द्वारा अभिनय किया जाता हैं जैसे कथक नृत्य में भी होता हैं। (खांडगे)

लावणी लोकनृत्य में 'गीतं वाद्यम तथा नृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते' का उल्लेख मिलता है जिसमें इसकी व्याख्या करके नृत्त व नृत्य का परिचय दिया गया है, गायन, नर्तन, अभिनय परम्परा की चर्चा करते हुए बैठकीची

लावणी में भाव बताया गया है (धोंड 249)। पत्रिका के अध्ययन में चेहरे के भावों के विषय में कथक में बैठकी भाव व लावणी में बैठकीची लावणी पर अभिनय में समानता को बताये हैं, जिसमें दोनों नृत्य शैली में बैठकर भावनात्मक रूप से बहुत सूक्ष्मता से भावों को किया जाता हैं (भागवत 1)। साक्षात्कार में बताया गया कि लावणी लोकनृत्य में पदन्यास करते हुए भी अभिनय दिखाया जाता है कथक में भी पदन्यास करते हुए अभिनय व्यक्त करते हैं (भागवत)। साक्षात्कार में प्रश्न करने पर कहा गया कि लावणी लोकनृत्य में आंगिक, वाचिक, सात्विक अभिनय होते हैं, और अलग-अलग नायिकाओं का भी वर्णन होता हैं (खांडगे)।

कुछ लावणी कलाकार, कथक कलाकार और संगीतकारों से लावणी लोकनृत्य और कथक नृत्य के अभिनय में चर्चा करते हुए अपने विचार दिए हैं कि दोनों परम्पराओं में काफी समानताए हैं। साक्षात्कार के चर्चा में मत है कि लावणी सम्राज्ञी यमुनाबाई बाई वाईकर और प्रसिध्द कथक नर्तक पंडित बिरजू महाराज जी एक कार्यक्रम में लावणी में एक साथ अभिनय प्रस्तुति किये थे जिसमें बैठकर भाव अभिव्यक्त किया गया था (कुंटे)। विठाबाई नारायणगावंकर प्रसिद्ध लावणी नृत्यांगना सन् 1978 में सर्वसाक्षी मराठी फिल्म में बैठकीची लावणी में तबला, सारंगी, हारमोनियम के साथ बहुत सुन्दर अभिनय अभिव्यक्त किये हैं (नारायणगावंकर)। कुछ कलाकारों ने लावणी और कथक में अंतर भी बताया चूँकि लावणी एक लोकनृत्य हैं और कथक शास्त्रीय नृत्य हैं फिर भी यह संबोधित किया कि लावणी और कथक नृत्य शैली एक-दुसरे की सगी बहनें हैं (संगमनेरकर)।

साक्षात्कार में कहा गया कि लावणी लोकनृत्य कलाकार गुलाब बाई संगमनेरकर, विठाबाई नारायणगांवकर, लक्ष्मीबाई कोल्हापूरकर, यमुनाबाई वाईकर, सुरेखा पुणेकर, वर्षा संगमनेरकर, मधु काम्बिकर, माया जाधव हैं जिन्होंने लावणी में भाव सौदर्य बताया हैं जिसमें भावनात्मक भाव गहरा हैं। इनमें से कुछ कलाकारों ने कथक नृत्य का भी प्रशिक्षण लिया हैं। (जमेनिस)

साक्षात्कार द्वारा वर्तमान में लावणी और कथक में जुगलबंदी प्रस्तुति दे रहे हैं अदिति भागवत और हर्षदा जाम्बेकर हैं, अदिति भागवत ने कथक की अदा, लावणी का ठुमका में कुछ सालों से कार्यरत हैं। अदिति भागवत कुछ मराठी फिल्मों में भी लावणी पेश किये हैं (भागवत)।

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

नाट्यशास्त्र के अनुसार अभिनय के चार प्रकार हैं ये चार प्रकार ये हैं– (1) आंगिक, (2) वाचिक, (3) आहार्य, (4) सात्विक (शास्त्री 2) साक्षात्कार में प्रश्न करने पर कहा गया कि लावणी लोकनृत्य में आंगिक, वाचिक, सात्विक, आहार्य अभिनय होते हैं, तथा अलग-अलग नायिकाओं का भी वर्णन होता हैं (खांडगे)। कथक नृत्य में आंगिक, वाचिक, आहार्य, सात्विक अभिनय सारभूत हैं (टाक et al 73)

प्रस्तुत शोध विषय का अध्ययन करने से मेरी दृष्टिकोण के अनुसार दोनों नृत्य शैलियों में आंगिक, वाचिक, सात्विक अभिनय समानता रखते हैं, परन्तु लावणी और कथक नृत्य शैली दोनों का पेश करने का अंदाज अलग-अलग हैं। आगे इन चारों अभिनय का विस्तारपूर्वक मेरे अध्ययन द्वारा बताया हैं जो निम्न हैं–

1. आंगिक अभिनय

अभिनय दर्पण के अनुसार आंगिक अभिनय के साधन में जैसे–अंग में हस्त, शिर, वक्षस्थल, कटि, पार्श्व तथा पैर इत्यादि। प्रत्यंग में कंधा, बाहु, पीठ, कोहनी, कलाई इत्यादि, उपांग में नेत्र, भौंह, मुख, एड़ी, पुतली, पलके, ओंठ इत्यादि आते हैं (दाधीच 30-31)। कथक नृत्य में बहुत सूक्ष्म व सहजता के साथ आंगिक अभिनय का प्रयोग होता हैं कथक में मुद्राओं का प्रयोग विभिन्न रचनाओं में किया जाता हैं परन्तु भरतनाट्यम, कथकली नृत्य में जैसे मुद्राओं का प्रयोग होता हैं वैसे कथक में नहीं होता हैं (टाक 76-78)। कथक नृत्य के भाव पक्ष में भजन, दोहे, गजल, वंदना, ठुमरी इत्यादि में अभिनय प्रस्तुत किया जाता हैं (नागर 73 et al)। इन सभी में आंगिक अभिनय का प्रयोग होता हैं। मेरी दृष्टिकोण से लावणी में भी आंगिक अभिनय दिखायी देते हैं चूँकि प्रस्तुत शोध अध्ययन करते समय साहित्य समीक्षा, साक्षात्कार व चलचित्र द्वारा भी यह ज्ञात हुआ कि अभिनय करते समय सूक्ष्मता के साथ मुद्राओं का प्रयोग, किसी कथानक में कृष्ण की मुद्रा, मटकी पकड़ने की मुद्रा, घुंघट का भाव, नेत्रों, भवें, कंधों का प्रयोग करते हुए अभिनय दिखाया जाता हैं। आगे साक्षात्कार में भी प्रश्न करने में कहा गया कि एक ही नायिका कभी कृष्ण के पात्र में, कभी राधा के पात्र में जैसे मटकी धारण करते हुए अभिनय करते हुए, कृष्ण से विनती करते हुए अंजलि हस्त मुद्रा में अभिनय व्यक्त करती है जैसे कथक में भी किया जाता हैं (खाडगे)। कथक नृत्य में भी किसी कथानक में पात्र चित्रण दिखाते समय मुरली की मुद्रा, मटकी की मुद्रा है, नेत्रों व भवें कंधो का चलन गतभाव, ठुमरी, भजन, गतनिकास इत्यादि में दिखाया जाता है।

2. वाचिक अभिनय

नाट्यशास्त्र के अनुसार वाचिक अभिनय वाणी द्वारा प्रस्तुत किया जाने अभिनय हैं (शास्त्री 47)। कथक नृत्य में वाचिक अभिनय के अन्तर्गत आमद, भजन, ठुमरी, कथानकों, गजल, पढंत, परण में वाचिक अभिनय आते हैं जो महत्त्वपूर्ण भी होते हैं प्राचीन काल में स्वयं गाकर अभिनय प्रस्तुत किया जाता था (सिंह 44-45)। साक्षात्कार में कहा गया की लावणी लोकनृत्य में भी स्वयं गाकर अभिनय प्रस्तुत किया जाता हैं जैसे यमुनाबाई वाईकर जी ने बैठकर लावणी ठुमरी गाती थी तथा अभिनय भी प्रस्तुत करती थी वैसे ही कथक ठुमरी में भी गाकर अभिनय प्रस्तुत किया जाता है ऐसी समानता दोनों नृत्य शैली में बताये हैं (जेमेनिस)। जो वाचिक अभिनय के अन्तर्गत में आता है।

3. आहार्य अभिनय

कथक नृत्य के आहार्य अभिनय के अन्तर्गत लहँगा चोली, मुगल कालकी वेशभूषा में चूड़ीदार पायजामा व घेरदार अंगरखा, दुपट्टा, हाथ-पाँव में आलता, झुमके, भुजाओं में बाजूबंद, मोतियों की माला, कानों में कुंडल, चूड़ियाँ, हार, अँगूठी, घुँघरू, बिछिया इत्यादि। रुप सज्जा के अन्तर्गत आँखों की सज्जा के लिए मस्कारा, आईलाईनर, आईशैडो, चेहरे में फाउंडेशन इत्यादि लगाते हैं (टाक 114 -117)। साक्षात्कार में बताया गया कि लावणी लोकनृत्य में भी नौवारी साड़ी, मोतियों की माला, हार, नथ, चूड़ियाँ, कानो में कुंडल, भुजाओं में बाजुबंद, पैरों में बिछिया, पैरों में घुँघरू, इत्यादि लावणी के आहर्य अंग हैं (खांडगे)।

4. सात्विक अभिनय

मन की अवस्था द्वारा किया गया अभिनय सात्विक अभिनय कहलाता है जैसे क्रोध का भाव, वीरता का संकेत आदि में सिर्फ मन की अवस्था से भाव प्रकट करते हैं (ब्योहार 107)। कथक नृत्य में ऐसे भाव दृष्टिगोचर होते हैं जैसे बैठकी भाव में कोई भी अष्टनायिकाओं की अवस्था के अनुसार भाव दिखाते हैं। साक्षात्कार द्वारा ज्ञात हुआ है कि लावणी खासकर बैठकी लावणी में बिना कुछ मुद्राओं के बिना शब्दों के अर्थो को अभिनय अभिव्यक्त करते हैं (संगमनेरकर)।

कथक और लावणी में भाव

लावणी लोकनृत्य तीन प्रकार के हैं शाहिरी लावणी (भेदिक लावणी), बैठकीची लावणी, फडाची लावणी। भेदिक लावणी गण, गवळण, इत्यादि आते हैं(शिंदे 85)। गवळण में किसी कथानक जैसे राधा-कृष्ण की छेड़छाड़, माखन चोरी, मटकी फोड़, इत्यादि में पात्रों के चरित्र धारण करते हुए अभिनय व्यक्त करने की प्रथा हैं, जिसमें कभी कृष्ण, कभी राधा का पात्र लेते हैं कृष्ण दिखाते समय कृष्णा की मुद्रा, राधा दिखाते समय राधा की मुद्रा धारण कर कथानक में भाव दिखाते हैं राधा कृष्ण से विनती करते हुए अपनी बात कहते हुए भाव; जिसमें मुद्राओं एवं मुखाभिनय द्वारा कथानक की प्रस्तुति देते हैं (खांडगे et.al)। कथक नृत्य में भी गतभाव में माखन चोरी, होली, आदि प्रस्तुति देते हुए एक ही नर्तक प्रत्येक पात्र की भूमिका निभाते हैं, जिसमें कथानको की प्रस्तुति में मुद्राओ, मुखाभिनय तथा भिन्न-भिन्न गतनिकास करके विभिन्न प्रकार के अभिनय दिखाते हैं (सिंह 207)।

बैठकी भाव : कथक व लावणी के पक्ष में

लावणी के एक प्रकार में बैठकीची लावणी जो उत्तर हिंदुस्थानी ठुमरी पर आधारित होती हैं जिसमें तबला पेटी के साथ बैठकर लावणी पेश किया जाता हैं, विभिन्न रागों, गायन, अभिनय, विशेषकर मुद्राभिनय ये प्रकार से लावणी व्यक्त की जाती हैं। (शिंदे 83)। बैठकीची लावणी शास्त्रीय ढंग से विलंबित गति के साथ शुरू होती हैं, शाहिर होनाजी ने बैठकी लावणी निर्माण किये और उन्होंने विकसित भी किया (पाटिल 24)। बैठकीची लावणी की शुरुआत पेशवा काल में प्रारंभ हुई, ये लावणी शब्द के अनुसार अभिनय व्यक्त करते हैं तथा चेहरे के अभिनय के साथ भाव प्रदर्शित करते हैं (खुडे 213)। साक्षात्कार में प्रश्न पूछने में यह बताया गया कि एक ही शब्द के अर्थ को या वाक्य को विभिन्न मुद्राओं द्वारा और नयन भाव द्वारा, अंगाभिनय द्वारा बैठकीची लावणी प्रस्तुत किया जाता है (संगमनेरकर et.al)

एक चलचित्र में भारत रत्न लता मंगेशकर द्वारा एक गायी गई लावणी में लावणी सम्राज्ञी गुलाब बाई संगमनेरकर जी ने बैठकीची लावणी में बहुत सुन्दर अभिनय प्रस्तुती दिये तथा लता मंगेशकर जी द्वार एक जानकरी भी मिली जिसमें उन्होंने कहा कि बैठकीची लावणी शास्त्रीय संगीत पर आधारित होती हैं (संगमनेरकर)।

कथक नृत्य में बैठकर अभिनय प्रस्तुत करने की एक खास परंपरा है, मुगलकाल में नवाबों और महाराजों के महफिलों में ये कला विकसित हुई। बैठकी भाव ठुमरी पर आधारित होती हैं, मुगल काल में कत्थक नृत्य काफी ऊँचे शिखर में थी। एक ही शब्द के अर्थ के भाव रात भर महफिलों में बताया करते थे जिनमें शम्भू महाराज, अच्छन महाराज, लच्छू महाराज, सुन्दर प्रसाद, आदि अनेक कलाकार निपुण थे। बिना पदाघातो, तोड़े, परण, अंगभंगिमाओं के सूक्ष्म अभिनय से बैठकी भाव प्रस्तुत किया जाता है, बैठकी भाव में नर्तक दर्शकों तक सुक्ष्म अभिनय द्वारा अपने भाव पहुँचाते थे जो बहुत कठिन कार्य था (सिंह 213-215)।

दूरदर्शन सह्याद्री में एक चलचित्र में लक्ष्मीबाई कोल्हापुरकर ने खड़ी लावणी में जिसमें खड़े होकर शूरवीर और विरह रस में नायिका के भाव बताये हैं। लक्ष्मीबाई कोल्हापुरकर जी ने कथक नृत्य की भी शिक्षा लिये हैं। शूरवीर का घोड़ा कैसे होता है फिर कभी नायिका के रूप सौन्दर्य और उसके विरह रस के भाव, घोड़े की चाल कैसे होती हैं ये सब नायिका व शूरवीर के चरित्र का वर्णन पदविन्यास और हाथों की मुद्राओं द्वारा अभिनय व्यक्त किये हैं (कोल्हापुरकर)।

कार्य-प्रणाली

प्रस्तुत शोध विषय के कार्यप्रणाली में प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ा द्वारा जानकारी ली गयी है, इस शोध विषय में मात्रात्मक व गुणात्मक दोनों शोध विधि का प्रयोग किया गया है तथा साहित्य समीक्षा, साक्षात्कार, सहसंबंध शोध विधि का प्रयोग लिया गया है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध विषय का यह निष्कर्ष निकलता है कि कथक नृत्य व लावणी लोकनृत्य में अभिनय अंग प्रधान रूप से विद्यमान है तथा दोनों नृत्य शैली की परम्पराओं में अभिनय के तत्त्व महत्त्वपूर्ण दृष्टिगोचर होते हैं। मैंने अपने अनुभवजन्य, साहित्य समीक्षा और गुणात्मक रूप से साक्षात्कार के माध्यम से यह परिणाम निर्धारित किया कि लावणी लय व

छंदों में बँधी होती हैं तथा ढोलकी की थाप के साथ नर्तकी मंच में गणपति का वंदन करने के बाद घुंघट का भाव लेते हुए रंगमंच में प्रवेश करती है उसके बाद लावणी प्रारंभ होती हैं। कथक नृत्य एक शास्त्रीय विधा हैं उसका भाव पक्ष बहुत विशाल हैं, आंगिक, वाचिक, सात्विक, आहार्य अभिनय कथक नृत्य में प्रमुख रूप से विद्यमान हैं। दोनों ही नृत्य शैलियों में ठुमरी में अभिनय किया जाता है जैसे कथक में बैठकी भाव, लावणी में बैठकीची लावणी में शास्त्रीय ढंग मुद्राभिनय, चेहरे के अभिनय के साथ बहुत बारीकी से से भाव व्यक्त करते हैं।

अतः शोध विषय के अध्ययन द्वारा लावणी व कथक अभिनय पूर्ण रूप से सम्बंधित हैं सिर्फ पेश करने का अंदाज दोनों नृत्य शैली का अलग- अलग हैं जिससे लावणी और कथक का प्रदर्शन अलग-अलग रूप में देखने को मिलता है। प्रस्तुत शोध विषय से दोनों नृत्य शैली के कलाकार और अन्य कलाकार भी संस्कृति से रू-ब-रू हो पाएँगे तथा इस शोध आलेख में कथक और लावणी के अभिनय पक्ष में कोई कार्य नहीं हुआ हैं इस दृष्टि से प्रस्तुत शोध विषय में कार्य किया गया हैं जिससे दोनों नृत्य शैली के कलाकार अभिनय पक्ष को गहराई तक समझ पाएँगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शास्त्री, बाबूलाल शुक्ल, नाट्यशास्त्र भाग 2, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, पुर्नमुद्रण वि.सं . 2072, पृ .४
2. वही पृ. 2
3. वही पृ. 47
4. सिंह, मांडवी, भारतीय संस्कृति में कत्थक परम्परा, स्वाति पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण 1990, पृ. 37
5. वही पृ. 44-45
6. वही पृ. 207
7. वही पृ. 213-215
8. धोंड, मधुकर वासुदेव, मराठी लावणी, मौज प्रकाशन गृह, संस्करण पुणमुद्रण 2020, पृ. 13
9. वही पृ. 247
10. दाधीच, पुरु, कथक नृत्य शिक्षा भाग 2, बिंदु प्रकाशन, संस्करण 5, 26-01-2019
11. दाधीच, पुरु, अभिनय दर्पण, बिंदु प्रकाशन, संस्करण तृतीय, 2017
12. टाक, माया, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्युटर्स, वर्ष 2006, पृ. 76
13. वही पृ. 76-78
14. वही पृ. 114- 117
15. नागर, विधि, ठुमरी एवं कथक et al., बी.आर. रिदम्स नई दिल्ली, संस्करण 1, 2020 पृ. 77
16. वही पृ. 73-85
17. खुड़े, सोपान हरिभाऊ, लावणी रंग आणि रूप, प्रफुल्लता प्रकाशन, संस्करण 1 : 22 दिसम्बर 2011
18. शिंदे, विश्वनाथ, पारंपरिक मराठी तमाशा आणि आधुनिक वगनाट्य, शब्दालय प्रकाशन श्रीरामपूर, संस्करण 2, अप्रैल 2015
19. पाटिल, विजय, मराठी लावणी : वाङ्मय आणि कला, अनुबंध प्रकाशन, संस्करण 1 : 22 अक्टूबर 2020
20. भागवत, अदिति, https://indiaartreview.com/art जब कथक और लावणी को मिला साझा मंच, 26 दिसंबर 2020, 1
21. भागवत, अदिति, हिमानी खोंडे, 09-09-2024
22. संगमनेरकर, वर्षा, हिमानी खोंडे, 20-09-2024
23. खांडगे, प्रकाश, हिमानी खोंडे, 03-09-2024
24. जमेनिस, शर्वरी, हिमानी खोंडे, 18-05-2023
25. कुंटे, चैतन्य, हिमानी खोंडे, 19-05-2023
26. पुणेकर, सुरेखा, हिमानी खोंडे, 30-11-2022
27. नारायणगांवकर, विठाबाई, सर्वसाक्षी, जी म्यूजिक मराठी, आदित्य निकम, 11-11-2022
28. कोल्हापुरकर, लक्ष्मीबाई, लावण्यमयी लावणी, दूरदर्शन सह्याद्री, 3-12-2021, 24:37 पर उपलब्ध
29. संगमनेरकर, गुलाबबाई, राजसा जवळी जरा बसा लता मंगेशकर, The Listene 1, 11-01-2020, 0:20 पर उपलब्ध
30. ब्योहार, चेतना, कथक कल्पद्रुम, स्वाति पब्लिकेशन दिल्ली, संस्करण 17 अक्टूबर 2018